15.7.24

Pg 1 D+

Tender Heart High School, Sec. 33-B, Chd.

कक्षा- सातवीं   शिक्षिका - सुमन शर्मा

विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय';
कवि - जयशंकर प्रसाद

(भाग-1)

पुस्तक- नवतरंग-7

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

आज हम पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय' जो आपकी हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ 36 पर दिया गया है।

बच्चो, यह पाठ कविता के रूप में है। कविता की व्याख्या जानने से पहले हम इस कविता का सारांश जानेंगे। यह कविता हिंदी जगत के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गई है। कवि ने इस कविता में भारत के महान राजा अशोक के बारे में है। इसमें कवि ने अशोक द्वारा विश्व जीतने की कामना, कलिंग पर विजय और फिर पश्चाताप, मानवता, परोपकार के प्रति झुकाव का वर्णन किया है। कलिंग विजय के बाद अशोक का हृदय-परिवर्तन हो गया और उसने हथियार त्याग दिए। बस, यह कविता इसी घटना पर आधारित है।

बच्चो! अब मैं आपको कविता की कुछ पंक्तियों को पढ़कर सुनाऊँगी तत्पश्चात् उसका अर्थ समझाऊँगी। सब बच्चे कविता की पंक्तियों को उच्च स्वर में पढ़ेंगे और समझने का प्रयास करेंगे।

15.7.24

Pg 2 B+

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय')

1. गंगा-तट पर पाटलीपुत्र नगरी विशाल,
थी बसी किए वैभव से अपना उच्च भाल।
शासक था वीर अशोक, मौर्य कुल का दीपक,
जिसके चरणों पर झुके नरेशों के मस्तक।

बच्चो! कविता की इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि गंगा के तट पर एक बहुत बड़ी नगरी पाटली-पुत्र बसी हुई थी। जिसे आज पटना के नाम से जाना जाता है। इसका माथा हमेशा शान से ऊँचा रहता था अर्थात् वहाँ रहने वाले लोग धन-धान्य से परिपूरित तथा सुख-चैन का जीवन जी रहे थे। पाटलीपुत्र का राजा वीर अशोक एक महान थे। वह मौर्यवंश का दीपक (पुत्र) था जिसकी महानता के कारण बड़े-बड़े राजा उनके आगे अपना सिर झुकाते थे क्योंकि वे दयालु शासक थे।

2. जिसके वैभव पर मुग्ध हुई जग की नजरें,
जयकार किया करती थीं गंगा की लहरें।
इतिहास न भूल सकेगा वह घटना महान,
प्रातः वेला, लाली से रंजित आसमान।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि लिख रहे हैं कि अशोक के वैभव को देखकर सारे संसार की आँखें चका-चौंध हो गई अर्थात् मोहित हो गईं। यहाँ तक कि गंगा की लहरें भी अशोक की महानता की जयकार किया करती थी।

Scanned with CamScanner

15.7.24

Pg 3 D+

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय')

इस प्रकार अशोक के महान व्यक्तित्व का बखान सारी दुनिया करती थी। अशोक के जीवन की एक ऐसी घटना का कवि ने वर्णन किया है जिसे इतिहास कभी नहीं भूल सकता। कलिंग का युद्ध भारतीय इतिहास का ऐसा युद्ध था, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। युद्ध (सुबह) प्रातः वेला में शुरू हुआ। उस समय आकाश सूर्य की लालिमा से रंगा हुआ लाल लग रहा था।

बच्चो! अब हम आगे की पंक्तियाँ पढ़ेंगे।

3. दौड़े उद्घोषक गली-गली उन्मत्त, क्रुद्ध,
कहते 'कलिंग से आज मगध का ठना युद्ध'!
तब राजभवन से चले अनूठे सेनानी,
चम-चम चमका नंगी तलवारों का पानी।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि लिख रहे हैं कि जैसे ही कलिंग के युद्ध के बारे में पता चला तो राज-महल में घोषणा करने वाले क्रोध में पागल हुए गली-गली यह घोषणा करते हुए जा रहे थे कि आज से मगध का कलिंग से युद्ध शुरू होने वाला है। युद्ध शुरू होने की घोषणा करते हुए उद्घोषक बहुत गुस्से में था। जब कलिंग युद्ध मगध के साथ होने की राज्य में घोषणा हुई तब राजभवन से अनोखे बड़े-बड़े बलवान योद्धा निकले, जिनके हाथों में चम-चमाती नंगी तलवारें थीं।

(पृष्ठ-3)

15.7.24

Pg. 4 D+

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय')

वे युद्ध की पूरी तैयारी करके क्रोध से भरे कलिंग युद्ध के लिए राजमहल से निकले थे।

4. पैदल, रथ, घोड़े शोर मचाते हुए चले,
गजराज गर्व से सूँड़ हिलाते हुए चले।
टीले, पर्वत, उर्वर, ऊसर, सरिता, निर्झर,
आगे आए फिर छूट गए पीछे पथ पर।

बच्चो! उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि जब राजभवन से सेना कलिंग युद्ध के लिए निकली तो कुछ सैनिक पैदल चल रहे थे, कुछ रथ पर तो कुछ शोर मचाते हुए घोड़ों पर चल रहे थे। घोड़े भी हिनहिनाकर शोर मचा रहे थे। वहीं सेना में मौजूद बड़े-बड़े हाथी गर्व से अपनी सूँड़ हिलाते हुए चल रहे थे। इसका तात्पर्य यह है कि वे निडर और साहस से अपनी सेना के साथ आगे बढ़ते जा रहे थे। कवि जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि जब अशोक की विशाल सेना कलिंग युद्ध के लिए जा रही थी तो उन्हें रास्ते में ऊँचे-ऊँचे टीले, पहाड़, फसलों से भरे खेत, कभी बंजर भूमि, नदियाँ और पानी के झर-झर करते झरने मिले। वे निरंतर आगे बढ़ते रहे, रुके नहीं। इन सबको रास्ते में पीछे छोड़कर सेना आगे बढ़ती गई।

Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय')

बच्चो, आज हम इस कविता को यहीं तक पढ़ेंगे। अब मैं आपको कुछ प्रश्न पूछूँगी जिनके उत्तर आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

प्रश्न-1 गंगा नदी के तट पर कौन-सी नगरी बसी हुई थी?
उत्तर- पाटलीपुत्र नगरी बसी हुई थी।
प्रश्न-2. सम्राट अशोक का संबंध किस वंश से था?
उत्तर- मौर्य वंश से संबंध था।
प्रश्न-3 अशोक की जीवन कौन-से युद्ध से बदल गया था?
उत्तर- कलिंग के युद्ध से अशोक का जीवन बदल गया।
प्रश्न-4 मगध की गलियों में क्या घोषणा की जा रही थी?
उत्तर- मगध की गलियों में यह घोषणा की जा रही थी कि मगध का कलिंग से युद्ध शुरू होने वाला है।
प्रश्न-5 अशोक की सेना ने रास्ते में क्या-क्या देखा?
उत्तर- अशोक की सेना ने रास्ते में ऊँचे-ऊँचे टीले, पहाड़, फसलों से हरे-भरे खेत, ऊसर भूमि, नदियाँ और पानी के झर-झर करते झरने मिले।

बच्चो, इस कविता का अगला भाग हम अगले हफ्ते पढ़ेंगे। कविता की पंक्तियों को धीरे-धीरे उच्च स्वर पढ़ने से कविता याद

Scanned with CamScanner

15.7.24

Pg. 6 B+

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5 'अशोक की कलिंग-विजय')

हो जाती है और उसका अर्थ भी समझ में आने लगता है। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी, जिसे आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य:-

सब बच्चे पृष्ठ-38 पर लिखे शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में सुलेख के रूप में लिखेंगे और याद करेंगे। थोड़ी-थोड़ी पंक्तियाँ कविता की याद करने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-6)

Scanned with CamScanner